जाति का चश्मा और खत्म होती सामाजिक चेतना

आज भारतीय समाज जिस दौर से गुजर रहा है, उसकी सबसे बड़ी त्रासदी आर्थिक विषमता, राजनीतिक अस्थिरता या सामाजिक संघर्ष नहीं है उसकी सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि हमने सही और गलत को पहचानने की अपनी नैतिक दृष्टि खोनी शुरू कर दी है। अब हम किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके चरित्र, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिक योगदान के आधार पर नहीं करते, बल्कि इस आधार पर करते हैं कि वह हमारी जाति, हमारे समाज, हमारे धर्म, हमारे राजनीतिक दल या हमारे समूह का है या नहीं और यही मानसिकता धीरे-धीरे हमारी सामाजिक चेतना को निगल रही है।

एक समय था जब समाज में यह कहा जाता था कि 'सत्य, सत्य होता है और असत्य, असत्य।' आज स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत दिखाई देती है। आज सत्य और असत्य का निर्धारण भी जातीय चश्मे से होने लगा है। यदि कोई भ्रष्ट अधिकारी मेरे समाज का है तो उसका भ्रष्टाचार मुझे दिखाई नहीं देता। यदि उसने करोड़ों रुपये की अवैध संपत्ति अर्जित कर ली, सरकारी योजनाओं को लूट लिया, गरीबों के अधिकारों पर डाका डाल दिया, रिश्वत लेकर न्याय का सौदा किया और सम्मानपूर्वक सेवानिवृत्त हो गया या फिर स्वच्छिक रूप से सेवानिवृत्ति ले ली , तब भी मेरे समाज के बहुत-से लोग उसे सफल व्यक्ति मानते हैं। उसकी आलीशान कोठी, फार्महाउस, महंगी गाड़ियाँ और बैंक बैलेंस उसके अपराधों के प्रतीक नहीं, बल्कि उसकी उपलब्धियों के प्रमाणपत्र बना दिए जाते हैं।

विडंबना देखिए, वही व्यक्ति यदि किसी दूसरे समाज का होता तो शायद सबसे पहले हम ही उसके विरुद्ध नारे लगा रहे होते। उसके घर की हर ईंट हमें भ्रष्टाचार की कहानी सुनाती, उसकी हर गाड़ी हमें रिश्वत की कमाई लगती और उसका हर सम्मान हमें व्यवस्था पर धब्बा प्रतीत होता। लेकिन जैसे ही वह 'अपना' हो जाता है, हमारी दृष्टि बदल जाती है। अपराध वही रहता है, केवल अपराधी की जाति बदल जाती है और उसके साथ हमारा नैतिक निर्णय भी बदल जाता है।

यह कैसी मानसिकता है? क्या ईमानदारी और बेईमानी की भी कोई जाति होती है? क्या रिश्वत लेने वाले हाथ का कोई धर्म होता है? क्या जनता के धन की लूट किसी समाज विशेष की सेवा कहलाती है? यदि नहीं, तो फिर हम अपने समाज के भ्रष्ट व्यक्ति को सम्मान क्यों देते हैं? यह प्रश्न केवल दूसरों से नहीं, स्वयं अपने अंतःकरण से पूछने की आवश्यकता है।

स्थिति केवल भ्रष्टाचार तक सीमित नहीं है। हमारी सोच का संकट इससे कहीं अधिक गहरा हो चुका है। यदि मेरे समाज का कोई नेता कानून अपने हाथ में लेकर किसी अधिकारी को सार्वजनिक रूप से थप्पड़ मार दे, उसका अपमान करे, उसे धमकाए या भीड़ के सामने उसकी गरिमा को ठेस पहुँचाए, तो मेरे समाज के अनेक लोग उस नेता को 'शेर ', 'जुझारू ', 'समाज का मसीहा' और 'स्वाभिमान का प्रतीक' कहकर उसका अभिनंदन करने लगते हैं। सोशल मीडिया पर उसके समर्थन में संदेशों की बाढ़ आ जाती है। लोग कहते हैं– 'हमारे नेता ने समाज का सिर ऊँचा कर दिया। '

लेकिन ज़रा कल्पना कीजिए कि यही घटना उलटी हो जाए। यदि किसी दूसरे समाज का अधिकारी मेरे समाज के किसी नेता के साथ कठोर व्यवहार कर दे, कानून के अनुसार कार्रवाई कर दे, या आवेश में उसे थप्पड़ मार दे, तब वही लोग इसे पूरे समाज का अपमान घोषित कर देंगे। धरने होंगे, प्रदर्शन होंगे, ज्ञापन दिए जाएँगे, सड़कें जाम होंगी और अधिकारी को जातिवादी, तानाशाह तथा अत्याचारी घोषित कर दिया जाएगा। अर्थात् घटना नहीं बदलती, केवल पात्र बदल जाते हैं और उनके साथ हमारा नैतिक निर्णय भी बदल जाता है। पिछले दोनों एक जाति विशेष के नेता ने दूसरी जाति के अधिकारी पर थप्पड़ उठाया तो उसे जाति के लोगों ने उसे नेता को शेर घोषित कर दिया वही एक अन्य जाति के नेता ने दूसरी जाति के एक भ्रष्ट अधिकारी को धमकाया तो उसे राजनेता को उन्हीं लोगों ने जातिवादी घोषित कर दिया यही दोहरा मापदंड सामाजिक पतन का सबसे बड़ा कारण है। न्याय का सिद्धांत कहता है कि एक जैसी घटना का मूल्यांकन एक ही कसौटी पर होना चाहिए लेकिन हमने कसौटी बदल दी है। अब न्याय का आधार संविधान नहीं, जातीय पहचान बनती जा रही है।

इस मानसिकता ने समाज में एक नया रोग पैदा कर दिया है– अंध-समर्थन का रोग। अब व्यक्ति अच्छा इसलिए नहीं माना जाता कि वह अच्छा है, बल्कि इसलिए कि वह 'अपना' है और दूसरा व्यक्ति बुरा इसलिए नहीं माना जाता कि उसने कोई अपराध किया है, बल्कि इसलिए कि वह 'दूसरे' समाज का है। यह सोच समाज को भीतर से खोखला कर रही है।

आज आवश्यकता इस बात की नहीं है कि हम अपने समाज के हर व्यक्ति का समर्थन करें। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने समाज के अच्छे लोगों का समर्थन करें और बुरे लोगों का सबसे पहले विरोध करें क्योंकि जो समाज अपने अपराधियों को सम्मान देता है, वह अपने ईमानदार लोगों का भविष्य स्वयं नष्ट कर देता है।

हम भूलते जा रहे हैं कि किसी भी समाज की प्रतिष्ठा उसके भ्रष्ट लोगों से नहीं, बल्कि उसके ईमानदार लोगों से बनती है। यदि किसी समाज का एक अधिकारी रिश्वत लेकर करोड़पति बन जाता है तो वह केवल सरकार को नहीं लूटता, बल्कि अपने पूरे समाज के माथे पर भी कलंक का टीका लगा देता है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि हम उसे कलंक नहीं, गौरव मान बैठते हैं। उसके सम्मान समारोह आयोजित किए जाते हैं, उसे मंचों पर मालाएँ पहनाई जाती हैं, उसके प्रभाव और संपत्ति की चर्चा गर्व के साथ की जाती है। धीरे-धीरे नई पीढ़ी के मन में यह धारणा बन जाती है कि ईमानदारी से नहीं, बल्कि प्रभाव, भ्रष्टाचार और जातीय संरक्षण से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

आज समाज में एक और खतरनाक प्रवृत्ति जन्म ले चुकी है। यदि किसी अधिकारी के विरुद्ध भ्रष्टाचार की जाँच होती है तो सबसे पहले उसके समर्थक यह नहीं पूछते कि उसने भ्रष्टाचार किया या नहीं, बल्कि यह पूछते हैं कि वह किस समाज का है। यदि वह अपने समाज का है तो जाँच को साजिश बताया जाता है, और यदि दूसरे समाज का है तो जाँच को न्याय कहा जाता है। क्या न्याय का भी कोई समाज होता है? क्या कानून जाति देखकर अपना निर्णय देता है? यदि संविधान सबके लिए समान है तो हमारी सोच समान क्यों नहीं है?

सोशल मीडिया ने भी इस मानसिकता को और अधिक गहरा किया है। किसी घटना का वीडियो सामने आता है, लेकिन लोग घटना नहीं देखते, पहले व्यक्ति का नाम देखते हैं। नाम से उसकी जाति का अनुमान लगाते हैं और फिर उसी के अनुसार अपनी राय बना लेते हैं। सत्य पीछे छूट जाता है और पहचान आगे निकल जाती है। यह स्थिति किसी भी लोकतांत्रिक समाज के लिए शुभ संकेत नहीं है।

हमारे गाँवों, कस्बों और शहरों में भी यही मानसिकता दिखाई देती है। यदि अपने समाज का व्यक्ति चुनाव जीत जाए तो उसकी हर गलती क्षमा योग्य हो जाती है। वह विकास करे या न करे, जनता की सुने या न सुने, भ्रष्टाचार करे या न करे, बस इतना पर्याप्त है कि वह 'अपना' है। दूसरी ओर यदि कोई दूसरा व्यक्ति पूरी ईमानदारी से जनता की सेवा कर रहा हो, तब भी उसे संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। यह प्रवृत्ति लोकतंत्र को व्यक्ति-पूजा और जाति-पूजा में बदल देती है।

सच तो यह है कि समाज का सबसे बड़ा हितैषी वह नहीं होता जो केवल अपनी जाति का झंडा उठाता है, बल्कि वह होता है जो न्याय, समानता और नैतिकता का झंडा उठाता है। महापुरुष कभी अपनी जाति के नहीं होते, वे पूरे समाज और पूरे राष्ट्र के होते हैं। जिन्होंने केवल अपनी जाति के लिए काम किया, उनका प्रभाव सीमित रहा; जिन्होंने मानवता के लिए काम किया, वे इतिहास में अमर हो गए।

यदि हम वास्तव में अपने समाज से प्रेम करते हैं, तो हमें सबसे पहले अपने समाज के दोषों को स्वीकार करना सीखना होगा। जो समाज आत्मालोचना नहीं करता, वह कभी प्रगति नहीं कर सकता। अपनी कमियों को छिपाना समाजभक्ति नहीं, बल्कि समाज के भविष्य के साथ छल है। सच्चा शुभचिंतक वही है जो अपने लोगों की गलतियों पर भी साहसपूर्वक प्रश्न उठाए।

हमें अपने बच्चों को यह नहीं सिखाना चाहिए कि 'अपना आदमी चाहे जैसा हो, उसका साथ देना है।' बल्कि उन्हें यह सिखाना चाहिए कि 'अपना वही है जो सत्य के साथ खड़ा हो।' यदि यह शिक्षा हम अपने वाली पीढ़ी को दे पाए, तो भारत की सामाजिक चेतना एक नई दिशा प्राप्त करेगी।

आज आवश्यकता जातीय एकजुटता से अधिक नैतिक एकजुटता की है। आवश्यकता इस बात की है कि जब कोई भ्रष्ट व्यक्ति पकड़ा जाए तो सबसे पहले उसका अपना समाज कहे 'उसने गलत किया है, उसे दंड मिलना चाहिए।' और जब कोई ईमानदार व्यक्ति अच्छा कार्य करे तो पूरा समाज उसकी सराहना करे, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म या वर्ग का हो। यही स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान है और यही सभ्य समाज का चरित्र भी।

सवाल केवल इतना नहीं है कि हम अपने समाज के लोगों का पक्ष क्यों लेते हैं। सवाल इससे कहीं अधिक गंभीर है कि क्या हमने अपनी अंतरात्मा को भी जातियों में बाँट दिया है? क्या हमारा विवेक भी अब समाज, बिरादरी और राजनीतिक झंडों का बंधक बन चुका है? यदि ऐसा है तो यह केवल सामाजिक संकट नहीं, बल्कि नैतिक दिवालियापन का संकेत है।

आज राजनीतिक दल भी इसी कमजोरी का लाभ उठा रहे हैं। वे जानते हैं कि यदि जातीय भावनाओं को उभार दिया जाए तो व्यक्ति अपने विवेक का उपयोग कम और अपनी पहचान का उपयोग अधिक करेगा। इसलिए चुनाव विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सुशासन पर कम, जातीय समीकरणों पर अधिक लड़े जाने लगे हैं। नेता जानते हैं कि यदि वे अपने समाज की भावनाओं को भड़का देंगे तो उनके अपराध भी क्षमा कर दिए जाएँगे। यही कारण है कि कई बार सार्वजनिक जीवन में मर्यादाएँ टूटती हैं, कानून का उपहास होता है, फिर भी समर्थकों की भीड़ ताली बजाती रहती है।

यह स्थिति केवल राजनीति तक सीमित नहीं है। प्रशासन, शिक्षा, व्यापार, सामाजिक संगठन और यहाँ तक कि पारिवारिक संबंध भी इस मानसिकता से प्रभावित होने लगे हैं। किसी नियुक्ति, पदोन्नति, सम्मान या कार्रवाई पर सबसे पहले योग्यता नहीं, बल्कि जातीय पहचान पर चर्चा होती है। यह प्रवृत्ति उस भारत के लिए शुभ संकेत नहीं हो सकती जिसने संविधान में समानता, न्याय और बंधुत्व को सर्वोच्च आदर्श माना है।

हमें स्वयं से एक प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए–यदि मेरा अपना बेटा भ्रष्टाचार करे, रिश्वत ले, कानून तोड़े और जनता का अधिकार छीन ले, तो क्या केवल इसलिए मैं उसे सही कहूँगा कि वह मेरा बेटा है? यदि उत्तर 'नहीं' है, तो फिर केवल जाति समान होने के कारण किसी भ्रष्ट व्यक्ति का समर्थन कैसे उचित हो सकता है? समाज भी तो एक बड़ा परिवार ही है। परिवार का सच्चा सदस्य वही होता है जो गलत को गलत कहने का साहस रखता है। यहां

यह भी याद रखना होगा कि अंध-समर्थन कभी किसी समाज को महान नहीं बनाता। महान समाज वही होता है जो अपने भीतर से ईमानदार नेतृत्व पैदा करे, चरित्रवान नागरिक तैयार करे और अपने ही लोगों की गलतियों पर सबसे पहले आवाज उठाए। जिस समाज में अपराधी सम्मानित और ईमानदार उपेक्षित होने लगें, वहाँ पतन अवश्य होता है।

हमें यह स्वीकार करने में संकोच नहीं होना चाहिए कि जातीय गौरव तभी सार्थक है जब उसके साथ नैतिक गौरव भी जुड़ा हो। केवल अपनी जाति पर गर्व करना पर्याप्त नहीं है; उस जाति के लोगों के चरित्र, ईमानदारी और सामाजिक उत्तरदायित्व पर भी गर्व करने योग्य स्थिति बनानी होगी। यदि हम केवल संख्या, शक्ति और प्रभाव पर गर्व करेंगे, लेकिन सत्य और नैतिकता को भूल जाएँगे, तो हमारा गौरव खोखला सिद्ध होगा।

आज समय की माँग है कि हम अपने बच्चों को जाति से पहले नागरिक बनना सिखाएँ, समुदाय से पहले इंसान बनना सिखाएँ और अधिकारों से पहले कर्तव्य निभाना सिखाएँ। उन्हें यह बताना होगा कि ईमानदारी किसी एक समाज की संपत्ति नहीं होती और भ्रष्टाचार किसी एक जाति का दोष नहीं होता। अच्छे और बुरे लोग हर समाज में होते हैं। सम्मान अच्छे कर्मों का होना चाहिए, न कि केवल पहचान का।

जब हम अपने समाज के भ्रष्ट व्यक्ति का भी विरोध करेंगे और दूसरे समाज के ईमानदार व्यक्ति का भी सम्मान करेंगे, तभी हमारा लोकतंत्र वास्तव में मजबूत होगा। तभी संविधान सुरक्षित रहेगा, तभी सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त होगा और तभी हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसा भारत छोड़ पाएँगे जहाँ व्यक्ति की पहचान उसकी जाति से नहीं, बल्कि उसके चरित्र से होगी।

आइए, हम स्वयं से एक संकल्प लें की न मैं किसी भ्रष्ट व्यक्ति का समर्थन केवल इसलिए करूँगा कि वह मेरे समाज का है, और न किसी ईमानदार व्यक्ति का विरोध केवल इसलिए करूँगा कि वह दूसरे समाज का है। मेरा धर्म सत्य होगा, मेरी जाति मानवता होगी और मेरी पहचान मेरा चरित्र होगा। यही सच्चे लोकतंत्र का मार्ग है, यही सामाजिक समरसता का आधार है और यही एक जागरूक नागरिक का सर्वोच्च कर्तव्य भी।

- डॉ. राजेंद्र यादव 'आज़ाद'
मोबाइल 9414271288

प्रकृति-पर्यावरण के सुरक्षा कवच को मत छेड़ों- वर्ना विनाश से नहीं बच सकोगे !

सृष्टि की उत्पत्ति के साथ प्रकृति की आवाज का भी जन्म हुआ है। प्रकृति की यह आवाज प्रकृति तक ही सीमित नहीं है अपितु पूरी पृथ्वी के कण कण में समाहित है। प्रकृति की यह आवाज सकल ब्रह्मांड में, हर ग्रह- तारे एवं नक्षत्रों की अनंत सीमाओं में मौजूद है। प्रकृति की आवाज, प्रकृति से जुड़े प्रत्येक जीव व प्राणी के अंतस में है इसलिए इस प्रकृति से जुड़े वनस्पति, जीव आदि सभी प्राणी प्रकृति के साथ मित्रवत रहकर प्रकृति ओर खुदकी, रक्षा कर रहे है। इसलिए इस धरा की प्रकृति मूलरूप से प्रत्येक जीव व प्राणी के लिये दया तथा रक्षा की आधारशिला है तथा प्रत्येक जीव, व्यक्ति तथा प्राणी के लिये सहिष्णुता व करूणा को प्रोत्साहित करती है, लेकिन मानव मात्र ने औद्योगिक विकास के नाम पर अनेक प्रकार का प्रदूषण पैदा कर प्रत्येक जीवन तथा वनस्पति जीवन की सुरक्षा कवच में सेंध मारकर खुद का जीवन कष्टमय किया है वही पर्यावरण को नष्ट करने का काम किया है ओर कर रहे है। पर्यावरण की महत्ता को पहचानने और प्रकृति के इस महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच को ओर अधिक शक्तिशली बनाने में अपना योगदान के लिए किसी कवि ने हमें आगाह किया है कि -

मत छेड़ों इस कुदरत को
तुम मिट्टी में मिल जाओगे।
खूब उगाओं पेड़ और पौधे,
गीत खुशी के गाओगे॥
जो फैलाए अधिक प्रदूषण
मानवता का दुश्मन है।
पर्यावरण की करें सुरक्षा
कुदरत उसका आंगन है॥
मत छेड़ों इस कुदरत को
तुम मिट्टी में मिल जाओगे।
खूब उगाओं पेड़ और पौधे,
गीत खुशी के गाओगे॥

पर्यावरण अर्थात प्रकृति का सुरक्षा कवच जिस प्रकार इंसान अपनी सुरक्षा हेतु विभिन्न प्रकार के सुरक्षा आवरण धारण करता है, ठीक उसी प्रकार प्रकृति ने न केवल स्वयं के लिये अपितु समस्त जीवों के लिये पर्यावरणरूपी आवरण धारण किया है किन्तु हमने अपने स्वार्थवश वायु जल, ध्वनि, इलेक्ट्रॉनिक्स के बढ़ते प्रदूषण से वातावरण में मौसमी उथल-पुथल, तेजाबी बरसात, थर्राती धरती तथा जल स्तर कर गिरना मानव जीवन तथा सम्पूर्ण प्राणी जगत के लिये घातक बनाने का काम किया है। हम पर्यावरण के महत्व को साल में एक दिन विश्व पर्यावरण दिवस मनाकर औपचारिकता का निर्वहन करते है किन्तु

शहरी, राज्यों, समूचे देश बल्कि सम्पूर्ण विश्व में अत्यधिक पर्यावरण प्रदूषण को घोषित कर अपनी मौत का मार्ग आसान बना रखा है। यही कारण है कि दुनिया में मानसिक तनाव, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, कैंसर, पेट की बीमारियां, आंत्रशोथ, एलर्जी, नपुंसकता या बांझपन, बहरापन तथा आँखों में जलन आदि सभी भयंकर बीमारियों का जन्मदाता प्रदूषित पर्यावरण पर चुप्पी साधे हुये है। टीबी., कैंसर. एचआईवी तथा एड्स आदि जानलेवा बीमारियों का एकमात्र कारण केवल मात्र दूषित खान पान और पर्यावरण की कमी है। मनुष्य जब तक प्रकृति के साथ खिलवाड़ करता रहेगा तो प्रकृति का तांडव भी तरोताजा बना रहेगा। कभी सूखा पड़ना, धरती का गर्माना, सामुद्रिक प्रकोप, अल्प वर्षा- बादलों के फटने से तबाह जल, जंगल, शहर आदि है, यह सब पर्यावरण असंतुलन का कारण है। जंगल कटान, नदियों से चौबीसों घंटे रेत, गिट्टी, मिट्टी आदि की लूटपाट है और इसी से पृथ्वी का असंतुलन बिगड़ा है, जिससे मनुष्य को भूकंप आदि के प्रकोप झेलने पड़ रहे है। इन सभी का समाधान है प्रकृति की आवाज, हरितक्रांती लाओ और अधिक से अधिक वृक्ष लगाओं। वृक्षारोपण एक महान पवित्र कार्य है इसका महत्व भारत में प्राचीन काल से ऋषि मुनि मानते आते है तथा प्राकृतिक चिकित्सा का एक महत्वपूर्ण अंग मानते है। वायु जल, ध्वनि, इलेक्ट्रॉनिक्स के बढ़ते प्रदूषण से वातावरण में मौसमी उथल-पुथल, तेजाबी बरसात, थर्राती धरती तथा जल स्तर कर गिरना मानव जीवन तथा सम्पूर्ण प्राणी जगत के लिये घातक है।

एक दो घंटे की बरसात होने पर दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई जैसे सेकड़ों शहरों में नगरपालिका-महापालिका की लापरवाही से नालों की सफाई के अभाव में जीवन ठप्प पड़ जाता है, पूरा देश देखता रहता है की शहरों के मोहल्लों में लोगों के घरों में पानी किस प्रकार प्रवेश कर सब कुछ चौपट कर देता है। ये एक दिन की बात नहीं हर वर्ष मानसून के आते ही यह देशव्यापी पीड़ा का इंतजाम नहीं हो सका है। आज प्रकृति को प्रदूषण से बचाने के लिये आवश्यक है कि वायुमण्डल में आक्सीजन व कार्बनडायआक्साइड का संतुलन बना रहे, आज की बढ़ती जनसँख्या के कारण जल, वायु इत्यादि समस्त प्राकृतिक संसाधनों की कमी सी होती जा रही है, आवश्यकता है कि हर मनुष्य अपने स्तर पर पृथ्वी को हरा-भरा रखने का प्रयास करें, जिस प्रकार बूंद-बूंद से एक घड़ा भर जाता है उसी प्रकार यदि प्रत्येक मनुष्य यदि अपने सम्पूर्ण जीवन में एक वृक्ष लगाने जैसा तथा एक वृक्ष को सुरक्षित रखने का महान कार्य कर पाता है तो वह इस प्रकृति पर बड़ा एहसान करता है, उसका यह छोटा सा प्रयास पृथ्वी को हरा भरा रखने के लिये पर्याप्त होता है। डीजल-पेट्रोल व गैस जैसे ईधनों से चलने वाले वाहनों से कार्बनडाय आक्साइड, सल्फर डायआक्साइड, नाईट्रोजन कार्बनमोनो आक्साइड जैसी विषेली गैसे इन्डस्ट्रीज से निकलने वाला जहरीला प्रदूषण और ऊपर से ईधन व अन्य सूक्ष्म लाभों के लिये मनुष्य हरे-भरे जंगलों को अंधा होकर काटता चला जा रहा है, परिणाम ये है कि प्रकृति का तापमान सामान्य से अधिक होता जा रहा है और बाढ़सूखा, भूचाल जैसी अप्राकृतिक घटनायें इस प्रकार घटित होती है कि मानों प्रकृति अपना क्रोध प्रकट कर रही हो और लाखों करोड़ों की सँख्या में मनुष्य काल ग्रस्त हो जाते है, धरती पर आने वाले भयंकर भूचाल-भूकंप, उत्तराचंल में बर्फीले पहाड़ दरक रहे है , समूचा हिमालय बादल फटने से आने वाली बाढ़ की विभीषिका में विनाश पर विनाश किए जा रहा है जो प्रकृति से मानव की छेड़छाड़ का परिणाम मात्र की चेतावनी नहीं तो ओर क्या मानेंगें ? तापमान में वृद्धि के कारण बर्फ का पिघलना, प्राकृतिक संसाधनों को एक सीमा से अधिक दोहन प्रकृति के साथ मनुष्य की छेड़छाड़ ही है और उसके भयंकर परिणामों की कल्पना मानव अपनी आँखों से साकार होते देख रहा है जहां घर के घर ही नहीं अपितु पूरा शहर धरशाही होकर कभी कीचड़ के दलदल में बहता दिखता है तो कभी जल में तबाह होते नजर आ रहा है ओर सरकारे लाचार होते हुये भी पीड़ित मानवों के लिए तत्काल पर्याप्त संसाधनों के अभाव आपदा के शांत होने की प्रतीक्षा करती दिखती है ओर जो तत्समय किया जाता है, वह न के बराबर ही होता है।

दिल्ली में बहने वाली यमुना इस अप्राकृतिक कृत्य का उदाहरण है, कभी गंगा-यमुना व सरस्वती अत्यन्त परम पूज्य नदियाँ भारत की शान हुआ करती थी परन्तु आज वहीं पवित्र पावन जमुना औधोगिक इकाइयों के प्रदूषण का केंद्र समस्त दिल्ली के प्रदूषित जल का संग्रहालय मात्र बन कर रह गयी हे, ये एक चेतावनी है मानवता को ये मात्र जमुना की नहीं अपितु विश्व की किसी भी प्राकृतिक जल संसाधन के लिये एक चुनौती हे जो नदिया न केवल सिंचाई का एकमात्र साधन बल्कि अनेक ऐसे कृत्यों का जैसे विद्युत उत्पादन, पेय व्यवस्था इत्यादि। धन्य है वो मानव जो कुदरत के ऐसे अनमोल खजाने पर न केवल लात मार रहा है बल्कि अपने लिये भयंकर त्रासदी के दरवाजे को दस्तक दे रहा है पर्यावरण से छेड़छाड़ का दूसरा उदाहरण है मध्य प्रदेश-गुजरात में बना इंदिरा सागर बांध परियोजना व टिहरी बांध परियोजना इस बांध के निर्माण मात्र के लिये मनुष्य ने करोड़ों अरबों वृक्षों की बलि चढ़ा दी है परन्तु उसे कल्पना भी नहीं है यदि पृथ्वी के इस भाग में यदि अप्राकृतिक घटना घटित हो गयी तो मानव के लिये महाविनाश होगा।

वन प्रकृति के लिये सुरक्षा कवच का ही नहीं अपूर्ति श्रृंगार का भी कार्य करते है। वन में हरे-भरे वृक्ष लतायें, झाडियाँ फल और फूल होते हे वे निवास स्थान होते है। भोरों, नाचती गाती तितियाँ, पशु पक्षियों का मानव जाति की रक्षा करने वाली अमूल्य संपदा ये वन ही होते है। वृक्ष की महत्ता आदि काल से ही भारतीय संस्कृति और सभ्यता में पूजनीय रही है कुछ वृक्ष जैसे नीम, पीपल, अशोक ये न केवल शुद्ध ऑक्सीजन का स्त्रोत है बल्कि ये वृक्ष सदियों से मानव जाति के लिये पूजनीय रहे हे। वृक्ष मूल रूप से मिट्टी के रक्षक है, वे न केवल आँधियों के तीव्र वेग को रोकते है वे मिट्टी को उड़ने से बचाते है। वृक्ष की जड़े पर्वतों की चट्टानों को मजबूती से पकड़े रहती है जिससे मिट्टी की सुरक्षा होती है और मिट्टी का वो उपजाऊ भाग जो ऊपरी परत के रूप में जाना जाता है संरक्षित रहता है। हवा की शुद्धता, शीतला इन्हीं पेड़ पौधों और वृक्ष होती है। वृक्ष ही वर्षा के होने या न होने के लिये जिम्मेदार है। जहाँ-जहाँ वृक्षों व वनों को असीमित रूप से काट दिया गया है वहां वर्षा होना ही रूक गयी है, ये वर्षा ही फसल के लिये आवश्यक है इससे मनुष्य जीवित रहता है। वातावरण की अस्वच्छ हवा को शुद्ध करने का काम भी प्रकृति के ये वन ही करते है, यदि निजी स्तर पर भी प्रत्येक व्यक्ति प्रदूषण कम करने पर कन्धे से कन्धा मिलाकर संकल्प ले ले कि वह न प्रदूषण फैलायेगा न ही किसी को फैलाने देगा तो पर्यावरण के लिये वरदान होगा ये संकल्प।

सच तो यह है कि प्रदूषण व्यक्ति के अस्तित्व पर लगा एक ऐसा प्रश्न चिन्ह है जिसके खतरे हमारे सिर पर तलवार बनकर लटक रहे है, ये खतरे किस बम से कम नहीं है। हाँ अभी समय है, समय रहते हम स्वयं समाज को सावधान कर सके तो इन खतरों का सामना कर सकेंगे वरना नियति का विधान तो शाश्वत है। करनी की सजा तो हमें भुगतनी ही पड़ेगी। इतना अवश्य है कि पर्यावरण और सामाजिक प्रदूषण के इस व्यवहार में हमें नाराज धरती को मनाने का संकल्प कर इन खतरों को एक चेतावनी के रूप में स्वीकार करना चाहिये। समय रहते सम्हलने की हमारी सोच ही हमें इस महाविनाश से बचायेंगी। आज आपको लगता है की इस ओर समूचा विश्व जागरूक हो चुका है, नहीं तो क्या कारण है कि प्रत्येक वर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस पर महोत्सव मनाने के होड हर देश कि सरकार को, हर जिले के कलेक्टर को होने से ग्राम स्तर से राजधानी तक हर स्थान पर कार्यक्रम ओर वृक्षारोपण किए जाते है ताकि इसी तरह ये लोग साल भर किए गए अपने अप्राकृतिक कृत्यों पर रोक लगाने जैसी उदघोषण का संकल्प ले प्रकृति कि आवाज को महाशुठ के आवरण से ढ़क कर दुनिया भर के चैनलों समाचार पत्रों में शोर कर सके, यह शोर सच में ही प्रकृति के प्राण ले रहा है। प्रकृति कि आवाज को न समझने वाले वनमानुष के वंशज ये अति शिक्षित समाज के लोग इस अभियान में शामिल होकर प्रकृति के लिये अत्यंत हानिकारक है और सिस्टम के ये ही लोग गांधी जी के तीन बंदरों के तरह आचरण कर अपना चरित्र चित्रण कर अपनी कलुषित मानसिकता से पर्यावरण के सुरक्षा कवच को छेडते हुये महाविनाश को आगाज दे रहे है।

आत्माराम यादव पीव वरिष्ठ पत्रकार
श्रीजगन्नाथ धाम काली मंदिर के पीछे
ग्वालटोली नर्मदापुरम मध्य प्रदेश
मोबाइल 99933766 16

एक नारी घर को स्वर्ग बना देती है

रायपुर। 'छत्तीसगढ़ में बढ़ते नशे की प्रवृत्ति, अपराध व मृत्यु भोज जैसी अनेक अप्रासंगिक प्रथाओं को रोकने महिलाये आगे आएं आप अपनी बेटियों को पढ़ाई के साथ कराते भी सिखाये ;जिससे वे महिलाओ पर जारी हिंसा की स्थिति में आत्मरक्षा भी कर सके। एक नारी घर को स्वर्ग बना देने के लिए काफी है। सभी नारियां ठान ले तो प्रदेश को नशामुक्त किया जा सकता है।' उक्त विचार बिलाईगढ़ की विधायक कविता प्राण लहरे ने व्यक्त किए। वे वक्ता मंच एवं जन एकता फाउंडेशन द्वारा राजधानी में आयोजित अग्रगामी महिला सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थी। इस अवसर पर प्रदेश भर में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर रही 100 महिलाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ समाज सेवी गुरुशरण पाल गरचा ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ मनीषा बी सिन्हा, डॉ नलिनी मढरिया, डॉ करुणा कुर्रे, डॉ प्राची भट्टर, डॉ रत्ना अग्रवाल, पंडित पी के तिवारी, राजकुमार धर द्विवेदी एवं अजीत कुकरेजा उपस्थित थे। वक्ता मंच के अध्यक्ष राजेश पराते ने जानकारी दी है कि बाल प्रतिभाओं द्वारा प्रस्तुत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समारोह का आरंभ हुआ। इस वर्ष सांप्रदायिक सौहार्द,थियेटर, फिल्म, जन जागरण, खेल, शिक्षा, चिकित्सा, विधिक सहायता, पत्रकारिता, व्यवसाय, साहित्य, कला, संस्कृति, लोक कला, पुलिसिंग एवं प्रशासन के क्षेत्र में बेहतर कार्य कर रही महिलाओं का इस सम्मान हेतु चयन किया गया था। अतिथियों ने इस अवसर पर कहा कि सम्मानित हो रही महिलाओं के कार्यों से समाज में आशा, विश्वास और परिवर्तन का दीप जल रहा है। अतिथियों ने कहा कि वक्ता मंच ने अपनी 3 दशकों की यात्रा में सेवा, संवेदना और संस्कार के नए अध्याय लिखे है। वक्ता मंच केवल संस्था नहीं वरन सामाजिक चेतना, वैचारिक संवाद और जन जागरण का एक सशक्त मंच है। कार्यक्रम के दौरान मितानिन और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से लेकर उच्च व्यवसायों मे संलग्न महिलाओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 100 महिलाओं को अग्रगामी महिला अवार्ड एवं सम्मान पत्र प्रदान कर उनका अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम के अंत में लकी ड्रॉ के माध्यम से चयनित सारंगढ़ की हीरादेवी निराला को वर्ष 2026 की भाग्यशाली महिला का अवार्ड प्रदान किया गया। आज इस अवसर पर राजेश पराते, शुभम साहू,विवेक बेहरा, मनीष अवस्थी, ज्योति शुक्ला, पूर्णेश डडसेना, धनेश्वरी नारंग, उमा स्वामी, राजाराम रसिक, दुष्यंत साहू, हेमलाल पटेल, लक्ष्मी नारायण लहरे, देव मानिकपुरी, डॉ इंद्रदेव वृद्ध, अखिलेश तिवारी सहित टीम वक्ता मंच के समस्त पदाधिकारी उपस्थित थे। वक्ता मंच के संयोजक शुभम साहू द्वारा प्रस्तुत आभार प्रदर्शन के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

आज सम्मानित होनेवाली महिलाओं में रविंदर कौर भांबरा, स्वीटी सलूजा, आफताब बेगम, डॉ आकांक्षा दुबे, सीमा पांडेय, अनुराधा दुबे, डॉ मान्या ठाकुर, अचला श्रीवास्तव, रूपल पांडे, जया सिंह, अदिति साहू, अर्पिता बेडेकर, रतनजीत कौर, आरजू मीर, अनुभूति श्रीवास्तव, पद्मा ब्यौहार, माधुरी साहू, सुमिता रॉय बर्मन, हीरादेवी निराला, डॉ करुणा, रिमी सिंह ,अंकुर शुक्ला, डॉ विधा सिंह राठौर, टिकेश्वरी खटकर, कुंती तेता, हिना देशपांडे , हेना यादव, रश्मि दुबे सहित 100 महिलाएं शामिल है।